चेतन मिश्र, चेतन, अचेतन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सम्पूर्ण सृष्टि दो तत्वों से बनी है– जड़ एवं चेतन। जड़ एवं चेतन ये दोनों तत्व मौलिक तत्व हैं। दोनों के मौलिक गुण धर्म एक–दूसरे के विरूद्ध हैं। शरीर जड़ चेतन का मिश्रण होने से मिश्र चेतन कहलाता है। आत्मा शुद्ध चेतन है। भौतिक पदार्थ परमाणु निर्मित होने के कारण जड़ या अचेतन कहलाते हैं। जड़ तत्व स्थूल होता है। इसमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श होता है। आत्मा अतिसूक्ष्म है उसे आंखों से नहीं देखा जा सकता। आत्मा स्वप्रकाश है उसी के कारण ही सम्पूर्ण सृष्टि चेतनवत् प्रतीत होती है।

शरीर अनित्य, अनेक एवं जड़ हैं। आत्मा नित्य, एक एवं चेतन है। इस प्रकार देह की अपेक्षा आत्मा में महान विलक्षणता है। अतएव देह से आत्मा भिन्न है। जब आग लकड़ी में प्रज्ज्वलित होती है, तब लकड़ी के उत्पत्ति–विनाश, बड़ाई–छोटाई और अनेकता आदि सभी गुण वह स्वयं ग्रहण कर लेती है। परन्तु सच पूछो, तो लकड़ी के उन गुणों से आग का कोई सम्बन्ध नहीं है। वैसे ही जब आत्मा अपने को शरीर मान लेता है, तब वह देह के जड़ता, अनित्यता, स्थूलता, अनेकता आदि गुणों से सर्वथा रहित होने पर भी उनसे युक्त जान पड़ता है। ईश्वर के द्वारा नियन्त्रित माया के गुणों ने ही सूक्ष्म और स्थूल शरीर का निर्माण किया है।

जीव को शरीर और शरीर को जीव समझ लेने के कारण ही स्थूल शरीर के जन्म–मरण और सूक्ष्म शरीर के आवागमन का आत्मा पर आरोप किया जाता है। जीव को जन्म–मृत्यु रूप संसार इसी भ्रम अथवा अध्यास के कारण प्राप्त होता है। आत्मा के स्वरूप का ज्ञान होने पर उसकी जड़ कट जाती है। इस जन्म–मृत्यु रूप संसार का कोई दूसरा कारण नहीं, केवल अज्ञान ही मूल कारण है। इसलिये अपने वास्तविक स्वरूप को आत्मा को जानने की इच्छा करनी चाहिये। अपना यह वास्तविक स्वरूप समस्त प्रकृति और प्राकृत जगत से अतीत, द्वैत की गन्ध से रहित एवं अपने आप में ही स्थित है। उसका और कोई आधार नहीं है। उसे

जानकर धीरे–धीरे स्थूल शरीरी, सूक्ष्म शरीर आदि में जो सत्यत्वबुद्धि हो रही है, उसे क्रमशः मिटा देना चाहिये।

यज्ञ में अरणिमन्थन करके अग्नि उत्पन्न करते हैं, तो उसमें नीचे–ऊपर दो लकड़िया रहती है और बीच में मन्थनकाष्ठ रहता है, वैसे ही विद्यारूप अग्नि की उत्पत्ति के लिये आचार्य और शिष्य तो नीचे–ऊपर की अरणियां हैं तथा उपदेश मन्थनकाष्ठ है। इनसे जो ज्ञानाग्नि प्रज्वलित होती है, वह विलक्षण सुख देने वाली है। इस यज्ञ में बुद्धिमान शिष्य सद्गुरु के द्वारा जो ज्ञानाग्नि प्रज्वलित होती है, वह विलक्षण सुख देने वाली है। इस यज्ञ में बुद्धिमान शिष्य सद्गुरु के द्वारा जो अत्यन्त विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करता है, वह गुणों से बनी हुई विषयों की माया को भस्म कर देता है। तत्पश्चात् वे गुण भी भस्म हो जाते हैं, जिनसे कि यह संसार बना हुआ है। इस प्रकार सबके भस्म हो जाने पर जब आत्मा के अतिरिक्त और कोई वस्तु शेष नहीं रह जाती, तब वह ज्ञानाग्नि भी ठीक वैसे ही अपने वास्तविक स्वरूप में शान्त हो जाती है, जैसे समिधा न रहने पर आग बुझ जाती है।

मनुष्य कदाचित् कर्मों के कर्ता और सुख–दुखों के भोक्ता जीवों को अनेक तथा जगत, काल, वेद और आत्माओं को नित्य मानते हो, साथ ही समस्त पदार्थों की स्थित–प्रवाह से नित्य और यथार्थ स्वीकार करते हो तथा यह समझते हो कि घट–पट आदि बाह्य आकृतियों के भेद से उनके अनुसार ज्ञान ही उत्पन्न होता और बदलता रहता है, तो ऐसे मत के मानने से बड़ा अनर्थ हो जायेगा, क्योंकि इस प्रकार जगत के कर्ता आत्मा की नित्य सत्त और जन्म–मृत्यु के चक्कर से मुक्ति भी सिद्ध न हो सकेगी।

यदि कदाचित् ऐसा स्वीकार भी कर लिया जाये तो देह और संवत्सरादि कालावयवों के सम्बन्ध से होने वाली जीवों की जन्म–मरण आदि अवस्थाएं भी नित्य होने के कारण दूर न हो सकेगी, क्योंकि तुम देहादि पदार्थ और काल की नित्यता स्वीकार करते हो। इसके सिवा, यहां भी कर्मों का कर्ता तथा सुख–दुःख का भोक्ता जीव परतन्त्र ही दिखायी देता है, यदि वह स्वतन्त्र हो तो दुःख का फल क्यों भोगना चाहेगा? इस प्रकार सुख–भोग की समस्या सुलझ

जाने पर भी दुःख भोग की समस्या तो उलझी ही रहेगी। अतः इस मत के अनुसार जीव को कभी मुक्ति या स्वतन्त्रता प्राप्त न हो सकेगी।

जब जीव स्वरूपतः परतन्त्र है, विवश है, तो स्वार्थ या परमार्थ कोई भी उसका सेवन न करेगा अर्थात् वह स्वार्थ और परमार्थ दोनों से ही वंचित रह जायेगा। यदि यह कहा जाय कि जो भलीभांति कर्म करना चाहते हैं, वे सुखी रहते हैं और जो नहीं जानते उन्हें दुःख भोगना पड़ता है तो यह कहना भी ठीक नहीं, क्योंकि ऐसा देखा जाता है कि बड़े–बड़े कर्मकुशल विद्वानों को भी कुछ सुख नहीं मिलता और मूढ़ों का भी कभी दुःख से पाला नहीं पड़ता। इसलिये जो लोग अपनी बुद्धि या कर्म से सुख पाने का घमण्ड करते हैं, उनका वह अभिमान व्यर्थ है। भौतिक वस्तुएं जड़ होने के कारण सुख नहीं दे सकती। जब भौतिक शरीर ही साथ नहीं देता तो अन्य भौतिक पदार्थों से कैसे आशा की जा सकती है। इस प्रकार जड़ और चेतन जो पृथक मूल तत्व हैं।